RJPP, Vol. 14, No. 2, 2016
ISSN (P): 0976-3635, (e):2454-3411
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
4.0000

पंजाब एवं हिमाचल प्रदेश की रियासतो के शासकों का संगीत के विकास में योगदान.१८५० ई॰ से १९४७ ई॰

डॉ॰ पुष्पा चौहान*
Guest faculty
Department of Music vocal
PGGCG, Sector 11,Chandigarh

शास्त्रीय संगीत हमारी धरोहर है। जिस राष्ट्र का संगीत अपनी आत्मिक चमक खो बैठता है, अपने आन्तरिक ऐश्वर्य को लोप कर देता है, और अपने पावन रूप को विनिष्ट कर बैठता है, वह राष्ट्र कभी भी शक्तिशाली नहीं हो सकता। किसी भी राष्ट्र के गौरव को सजीव बनाए रखने के लिए सबसे प्रथम उसके संगीत के एतिहासिक रूप को विशेषकर जब वे देश विदेशियों के अधिन रहा हो, प्राणवान रखना बहुत जरूरी है जिससे की वह राष्ट्र अपनी खोई हुई चेतना को पुनः प्राप्त कर सके। जब तक संगीत के एतिहासिक गौरव को संजीव नहीं बनाया जाएगा, तब तक आप अपने राष्ट्र को नवर्स्फूति, नवचेतना एवं नवजीवन प्रदान नहीं कर सकते । शास्त्रीय संगीत भक्ति का एक श्रेष्ठ माध्यम है और इसमें इतनी शक्ति है कि वह साधरण इन्सान की अर्न्तआत्मा को झक्कोर कर रख दें। संगीत किसी देश की संस्कृति की आत्मा है। किसी देश की संस्कृति का आधर ही संगीत है। उस संस्कृति को युगो-युगो तक जीवित रखने के लिए संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है। कोई भी उत्सव, पर्व, बिना संगीत के अधूरा है।

पटियाला रियासत - पटियाला रियासत की नींव महाराजा आला सिंह ;१६९५-१७६५द्ध द्वारा रखी गई महाराजा साहिब सिंह के शासनकाल में १८०९ ई॰ में पटियाला रियासत ब्रिटिश राज्य के अधिन हो गई और १८५७ की क्रांति में महाराजा नरेन्द्र सिंह ने ब्रिटिश सरकार की सहायता की जिसके फलस्वरूप रियासत की अत्याध्कि उन्नति हुई और महाराज नरेन्द्र सिंह के राज्यकाल में ही वस्तुतः पटियाला घराना की नींव पड़ी ।

इस रियासत के शासको में महाराजा भूपेन्द्र सिंह ;१८९१-१९३७द्ध अपने संगीत प्रेम और संगीतकारों के आश्रयदाता के रूप में विशेष उल्लेखनीय हैं आपने स्वयं सुप्रसि(कीर्तनकार तथा ताऊस वादक महन्त गज्जा सिंह की शिष्यत्व ग्रहण किया। महन्त गज्जा सिंह का प्रिय वाद्य दिलरूवा आज भी भैणी साहिब के सतगुरू जगजीत सिंह के पास सुरक्षित है।

भारत के प्रसि(विचित्रा वीणा वादक उस्ताद अब्दुल अजीत खाँ जैसे संगीतकार भी आपके दरबार में नियुक्त थे। पटियाला रियासत में कुछ संगीतकारों को आश्रय दिया हुआ था जैसे भाई महबूब अली ;सितार वादकद्ध प॰ दिलीपचन्द्र बेदी ;गायक १९२४-१९२७द्ध बाबा ढियो, इस्माईलखां ;तबलावादकद्ध, उस्ताद अब्दुल अजीज खाँ ;विचित्रा वीणा वादकद्ध, मम्मन खाँ, अलादिया खाँ;सारंगी वादकद्ध आदि।

ISSN (P): 0976-3635, (e):2454-3411
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
4.0000

महाराजा भूपेन्द्र सिंह के पुत्रा मृगेन्द्र सिंह भी संगीत के बहुत बड़े प्रेमी थे। इन्होंने संगीत की शिक्षा महमुव अली से प्राप्त की थी।

अतः हम कह सकते हैं कि ब्रिटिशकाल में इस रियासत के प्रायः सभी शासको ने अपनी गुण ग्राहकता का परिचय दिया और कलाकारों को संरक्षण प्रदान करते हुए संगीत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।[१]

कपूरथला रियासत - इस रियासत की नींव सरदार जस्सा सिंह कलाल द्वारा रखी गईं। जस्सा सिंह की गद्दी पर बैठने के पश्चात वह पुनः आहलुवालिया कहलाए। जस्सा सिंह मात्रा पाँच साल के थे कि उनकी माता उन्हें दिल्ली ले गई वहां उन्हें माता सुन्दरी जी ;गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज की ध्र्मपत्नीद्ध को दोतारा के साथ गुरवाणी कीर्तन सुनाने का अवसर प्राप्त हुआ। माता सुन्दरी जी बाल के मधुर कण्ठ स्वर में गुरूवाणी सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुई और गोद लेकर आर्शीवाद दिया। कपूरथला रियासत का वातावरण पहले से ही संगीतमय था क्योंकि इस रियासत की नींव गुरू स्वामी हरिदास के शिष्यो दिवाकर पंडित और सुधरक पंडित द्वारा रखी गई थी और इस रियासत में महाराजा रणबीर सिंह के सिहांसन पर बैठने के बाद रियासत में कई समाजिक और शैक्षिक सुधर हुए। पाठशालाओ, मस्जिदो, गुरूद्वारो, चिक्तिसालयो का निर्माण हुआ। इनके दरबार में उस समय के प्रसि(कलाकार नियुक्त थे। अन्य रवावी और मरासी कलाकार भी आमन्त्रित होते रहते थे। इस दरबार में अनेक गुणीजन सम्बध्ंित थे, जिनमें साई इलियास ;व्यास पंडितद्ध करीमवख्स अब्दुल रहीम खाँ ;हीमे खाँद्ध, वलीमुहम्मद, रहमत अली के नाम उल्लेखनीय हैं। रहमत अली से पटियाला के महन्त गज्जासिंह तथा महबुत अली ने शिक्षा पाई थी। इन्हीं कलाकारो की वजह से कपूरथला रियासत ने प्रसि(ि पाई थी।

महाराजा जगजीत सिंह भारतीय संगीत के साथ-२ अंग्रेजी संगीत के भी शौकीन थे। वे अंग्रेजी नाच भी अच्छा नाचते थे। महाराजा जगत सिंह के दरबार में कई रवाबी परम्परा के संगीतकार वेतन भोगी के रूप में नियुक्त थे। भाई वाबर, भाई जोगा, भाई अलादिया रवाबी, भाई मुबारक ;तबला वादकद्ध, भाई खडा, भाई वूडा और अन्य गुणीजन प्रायः आमंत्रित होते रहते थे। यह रियासत हमेशा प्रति वर्ष हरिवल्लभ संगीत सम्मेलन जालन्ध्र के लिए आर्थिक तथा अन्य सहायता देती रहती थी। दीवान अजीत बख्श , जो कपूरथला के प्रधनमंत्री थे, कुशल सितारवादक थे और संगीत सम्मेलनों में रूचि लेते थे।

इसलिए कहा जा सकता है कि इस रियासत के सभी लोग संगीत प्रेमी थे। वहाँ का खानदान जो मियां गुलाम जिलानी का परिवार कहलाता था, के अनेक सदस्य संगीत के विद्वान माने जाते थे। कपूरथला राज दरबार संगीत कलाकारो को उचित मान सम्मान प्रदान करता था और अनेक संगीतकार वेतन भोगी कर्मचारी थे। इस प्रकार इस रियासत ने शास्त्राीय संगीत के उत्थान में भरपूर योगदान दिया।

फरीदकोट रियासत - यह रियासत पंजाब अंचल की एक प्रसि(रियासत थी। इसके शासको में अन्तिम शासक महाराजा हरिन्द्र सिंह का जन्म २६ जनवरी १६१५ को हुआ। महाराज जी उच्च्व शिक्षा प्राप्त थे और अग्रेजी प्रभाव के कारण आपने एक बैण्ड स्थापित किया। श्री शारदा सिंह वैजुन वादन इस बैण्ड का इन्चार्ज था। महाराज शास्त्राीय संगीत को बड़े ध्यान से सुनते थे। महाराजा ने अपना एक आकाशवाणी केन्द्र की स्थापित किया था। जो सायं ६ बजे से ६ बजे तक अपना प्रसारण प्रसारित करता था। इसमें संगीत के क्षेत्रा में मुख्यतः गजल, गीत और कीर्तन आदि प्रस्तुत किए जाते थे। ग्रीष्म)तु में महाराज शिमला स्थित निवास में अपने संगीतज्ञों के साथ हर वर्ष जाते थे और संगीत का आन्नद लेते थे। इस रियासत का संगीत के विकास में काफी योगदान रहा है।[२]

मलेरकोटला रियासत - यह रियासत कव्वाली गायको के लिए प्रसि(थी। इसमें कई नक्कालों और कव्वालो के परिवार बसे हुए थे जो अपने परम्परागत व्यवसाय द्वारा जीविका निर्वाह करते थे। इस रियासत का पूरा वातावरण संगीतमय था। यद्यपि

ISSN (P): 0976-3635, (e):2454-3411
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
4.0000

सुगम संगीत अध्कि प्रचलित था। परन्तु फिर भी शास्त्राीय संगीत में संगीतज्ञ रूचि लेते थे। यहाँ के कव्वालों का संगीत शिक्षण शास्त्राीय संगीत से ही प्रारम्भ होता था और दरबार में समय-समय पर शास्त्राीय संगीत की सभाएं भी आयोजित होती रहती थी। जगराहो वाली प्रसि(गायिका इलाही जान और नाहन के उस्ताद वदें हस्न खाँ का गायन प्रायः आयोजित होता रहता था। प्रसि(फिल्म संगीत निर्देशक खयाम का सम्बन्ध् भी इसी क्षेत्रा ;रियासतद्ध से है। इस प्रकार इस रियासत का शास्त्राीय संगीत को बचाने में योगदान रहा।

नाभा रियासत - इस रियासत की नींव सरदार हमीर सिंह द्वारा सन् १५५५ ई॰ में रखी गई। परन्तु संगीत में अध्कि योगदान राजा रिपुदमन सिंह का रहा। महाराजा रिपुदमन सिंह के समय नाभा में भाई साहिब सिंह और उनके पुत्रा भाई तारा सिंह और भाई प्रेम सिंह संगीत विद्या के अच्छे जानकार थे। भाई प्रेम सिंह तबला, भाई तारा सिंह हारमोनियम और भाई साहिब सिंह सारन्दा बजाते थे। राजा रिपुदमन सिंह के दरबार में गुलाम हुसैन देहरादुन निवासी गजल गायक के रूप में उपस्थित रहते थे। वे कुशल गजल गायक थे। इस रियासत का योगदान सुगंम और शास्त्राीय संगीत को विकसित करने में रहा है।

प्रकृति की उन्मुक्त शोभा से भरपूर हिमाचल प्रदेश पंजाब का ही एक अंग था। इस क्षेत्रा में ३० छोटी छोटी रियासते थी। जिनके अनेक शासक कला प्रेमी थे। यहाँ के निवासी सरल हृदय सादा जीवन निर्वाह करने वाले और परिश्रमशील कृषक या व्यापारी थे। हिमाचल प्रदेश के देवी देवताओ के तीर्थ स्थान अध्कि होने से इसे देवभूमि कहा जाता था। धर्मिक वातावरण होने के कारण यहाँ भक्ति संगीत की ओर लोक रूचि अध्कि थी। शिमला से १८ मील दरू एक ठियोग नामक रियासत थी। यहाँ के राजा राणासाहिब शास्त्राीय संगीत की सभाएं आयोजित करते थे। इन सभाओ में प॰ दलीपचन्द्र बेदी, हरिश्चन्द्र वाली, अनन्तराम चौधरी, मदनलाल वाली, शिवनाथ खन्ना, भगत सिंह सांगडा, महादेव कथक आदि अनेक कलाकार आमन्त्रिात किए जाते थे। राजकुमार के जन्म दिवस पर एक मास से भी अध्कि अवध्ि तक संगीत सभाए होती रहती थी। राणा साहिब शास्त्राीय संगीत के अच्छे पारखी थे। उन्हें उच्च कोटि का राग और ताल का ज्ञान था।[३]

राजा कोटि राणा ठियोग के सम्बन्धी थे और इनकी रूचि भी शास्त्राीय संगीत के प्रति थी। इन्हें शास्त्राीय संगीत का अच्छा ज्ञान था और संगीत सभाओं का आयोजन करते रहते थे। जिनमें विशेषकर पंजाबी कलाकार आमन्त्रिात होते थे। अन्य रियासतों के यथा-मण्डी, हरिपुर, कुनिहार, नादौन, चम्बा, लम्बा गाँव, सुजानपुर टिहरा आदि के राजा भी शास्त्राीय संगीत के प्रेमी थे। सुजानपुर टीहरा प्रान्त के कलाकार श्री नरायणदास का पुत्रा हृदय राम सुन्दर गायक था। यह विशेषकर लाहौर में ही रहता था। विशेष अवसरो पर हिमाचल आते थे। चिन्ता राम सितार बजाता था और सुखराम तबला बजाता था इनके अतिरिक्त श्री वोगुराम और उनके दो पुत्रा नानक चन्द और दुर्गो दास गाते थे। इन सभी संगीत जीवियो का मुख्य कार्य धर्मिक तथा समाजिक पर्वो पर गायन-वादन करना था। इस क्षेत्रा के पंडित अमरनाथ नादौन से तीन मील दूर स्थित गाँव में निवास करते थे जो अध्कितर रागो पर आधरित धर्मिक पदो का गायन करते थे और विशेष अवसरो पर ख्याल गायन भी करते हैं। इसी प्रदेश के ध्र्मशाला निवासी श्री देशबन्धु पहाड़ी लोकगीत गाने के साथ-साथ शास्त्राीय गायन भी करते थे।

उत्तर भारतीय संगीत के विकास में भारतीय संगीतकारों को संरक्षण प्रदान करके विभिन्न रियासतो के शासको ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विशाल पंजाब अंचल की कुछ रियासतो के संक्षिप्त विवरण से स्पष्ट है कि इस क्षेत्रा में भारतीय शास्त्राीय संगीत के विकास में शासको ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

ISSN (P): 0976-3635, (e):2454-3411
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
4.0000

सन्दर्भ सूची

१. *विश्व संगीत का इतिहास, पृ°३३*
२. *डा° स्वतंत्रा शर्मा, पाश्चात्य स्वरलिपि (ति एवं भारतीय संगीत का इतिहास, पृ. २४४*
३. *डा° उमेश जोशी, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ° ४६५*
४. *डा° स्वतंत्रा शर्मा, पाश्चात्य स्वरलिपि(ति एवं भारतीय संगीत का इतिहास, पृ. २५२*
५. *विश्व संगीत का इतिहास, पृ°४१*
६. *डा° लक्ष्मी नारायण गर्ग, हमारे संगीत रतन, पृ°१६*
७. *डा° जोगिन्द्र सिंह बावरा, संगीत की उत्पत्ति और विकास, पृ°१५*
८. *डा° स्वतंत्रा शर्मा, पाश्चात्य स्वरलिपि प(ति एवं भारतीय संगीत का इतिहास, पृ. २८३*